नवभारत टाइम्स NBT

Lucknow Times

masalamix

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली/लखनऊ, गुरुवार, 5 अक्टूबर 2017 | ADVERTORIAL ENTERTAINMENT PROMOTIONAL FEATURE

कहीं मेरा बच्चा भी ब्लू वेल तो नहीं खेलता!

Mulayam.Yadav
@timesgroup.com

विदेश में अपना खौफ फैलाने के बाद ब्लू वेल गेम अब भारत में भी बच्चों को अपना शिकार बना रहा है। देश के कई हिस्सों से इस गेम के कारण बच्चों के खुदकुशी या खुदकुशी करने की कोशिश की खबरें आई हैं। हाल ही में लखनऊ में भी चौदह साल के बच्चे ने कथित रूप से ब्लू वेल गेम के चक्कर में स्युसाइड कर ली। ऐसे में, शहर के पैरंट्स के दिल में अपने बच्चे के मोबाइल के इस्तेमाल को लेकर शक बैठ गया है। घर से बाहर या फिर घर के बंद कमरे में उनका लाडला मोबाइल पर क्या कर रहा है, यह जानने को लेकर ज्यादातर पैरंट्स परेशान हैं। अपने इस शक को दूर करने और बच्चे की सलामती के लिए पैरंट्स ने उनकी जासूसी करवाने का तरीका अपनाया है। कई पैरंट्स ने इसके लिए प्राइवेट डिटेक्टिव्स को हायर किया है। जब हमने प्राइवेट डिटेक्टिव्स से बात की तो उन्होंने भी माना कि आजकल इस तरह के केसेस की संख्या बहुत बढ़ गई है। पैरंट्स अपने बच्चे के बिहेवियर में जरा सा भी चेंज देखकर हमसे उनकी जासूसी करवा रहे हैं।

पैरंट्स के मन में बैठ गया डर

यूं तो आजकल बच्चे फोन पर ज्यादा वक्त बिताते हैं लेकिन, पिछले कुछ समय से ब्लू वेल की गिरफ्त में फंसते बच्चों ने पैरंट्स के मन में डर बैठा दिया है। यह कहना है इनवेस्टिगेटिव सर्विस देने वाले स्लूथ्स इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर नमन जैन का। वह कहते हैं कि बच्चे अक्सर अकेले में फोन पर नेट सर्फिंग से लेकर गेम्स खेलते हैं। ऐसे में अगर पैरंट्स उन्हें डांटते हैं तो वह झगड़ा कर बैठते हैं। बच्चों का इस तरह का व्यवहार पैरंट्स को और भी डराता है। हमारे पास पिछले एक महीने में बच्चों की समस्याओं से संबंधित 50 से ज्यादा पैरंट्स की क्वेरी आ चुकी है। वे जानना चाहते हैं कि कहीं उनका बच्चा भी तो इस गेम का अडिक्ट नहीं है। हम अलग-अलग सॉफ्टवेयर्स के जरिए बच्चों की मोबाइल एक्टिविटीज पर नजर रखते हैं। अगर ऐसी किसी भी तरह की एक्टिविटी का पता चलता है तो बच्चों के साथ ही पैरंट्स की भी काउंसलिंग करते हैं।

हाथ में चोट का निशान दिखे तो करते हैं शक

पैरंट्स और बच्चों के बीच आजकल कम्युनिकेशन गैप इतना बढ़ गया कि उनके जीवन में क्या चल रहा है और क्या हो रहा है, इसकी भनक तक पैरंट्स को नहीं लगती। यह सच है कि ब्लू वेल नामक खतरनाक गेम से पैरंट्स जरा डरे हुए हैं। वे बच्चों को इस बारे में आगाह तो करना चाहते हैं लेकिन प्रभावशाली तरीके से बातचीत नहीं हो पाती। ऐसे में अगर बच्चों के शरीर में किसी भी तरह कैजुअल निशान भी आ जाता है तो उसे इस खेल से जोड़ लेते हैं। हाल ही में हमारे पास एक ऐसा केस आया, जिसमें पैरंट्स को उनकी बेटी के इस गेम से जुड़े होने का शक था। जब हमने इस बारे में पता किया तो ऐसा कुछ भी नहीं निकला। क्लास में खेलने के दौरान उसके हाथ में हल्की चोट लग गई थी। हम पैरंट्स को यह समझाते हैं कि बढ़ती उम्र में उन्हें अपने बच्चों के साथ संवाद बढ़ाने की आवश्यकता है।

> भावनात्मक रूप से कमजोर बच्चे इस तरह के आत्मघाती खेल का शिकार ज्यादा होते हैं। कई बार देखने में आता है कि परिवार में या फिर फ्रेंड सर्कल में बच्चों को ज्यादा तवज्जो नहीं दी जाती है। ऐसे में वे खुद को प्रूव करने के लिए इस तरह के काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। एक स्टेज के बाद वे इस गेम के इतना एडिक्ट हो जाते हैं कि अपनी जान तक खतरे में डालने से नहीं डरते।
>
> - डॉ. अमित आर्या, चाइल्ड सायकायट्रिस्ट, केजीएमयू

इन बातों का रखें ध्यान

बच्चे के लिए

- आपको किसी भी ऐसे काम के लिए हां कहने की जरूरत नहीं है, जिसे करके आप अनसेफ और अनकंफर्टेबल फील करते हैं। बच्चे पूरे कॉन्फिडेंस के साथ ऐसे टास्क को इन्कार करें।
- किसी दोस्त या अनजान को न कहने के लिए बहुत हिम्मत और कॉन्फिडेंस की जरूरत होती है। ऐसे में उन दोस्तों के साथ वक्त बिताएं जो न कहने की हिम्मत रखते हों।
- अगर आपका दोस्त कुछ ऐसा करने को कह रहा है जो आप नहीं कर सकते तो उसे कुछ और करने के लिए सजेस्ट करें।

पैरंट्स के लिए

- इस तरह की परिस्थितियों से निपटने के लिए याद रखें कि पैरंट्स और बच्चे दोनों के बात करने के लिए सही माहौल हो। याद रखें कि यह एक बातचीत है न कि किसी तरह की पूछताछ।
- बातचीत के दौरान अपनी बात लगातार बोलते रहने के बजाय बच्चे की भी बात, चिंता और उसके एक्सपीरियंस सुनने की कोशिश करें।
- बच्चों की फीलिंग्स को नकारने से बातचीत के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं। ऐसे में जो चीज आपको परेशान कर रही है, उसके बारे में वे बात करने से कतराएंगे। ऐसे में बच्चों की परेशानी को स्वीकार करें।
- इस तरह की परेशानी से निकलने में उसकी मदद करें और न कहने की आदत डलवाएं।
- बातचीत के दौर को तब तक जारी रखें जब तक बच्चा पूरी तरह इससे बाहर नहीं आ जाता।

इन देशों में बच्चे हुए ब्लू वेल के शिकार

यह है ब्लू वेल गेम

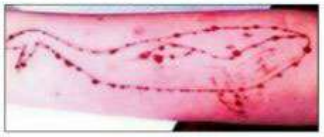

यह एक इंटरनेट बेस्ड गेम है। यह गेम एक सीरीज की तरह खेला जाता है। इसमें एडमिन खिलाड़ियों को रोज एक टास्क देता है। इस तरह के टास्क 50 दिन के टास्क दिए जाते हैं। इसमें खुद को नुकसान पहुंचाने और हॉरर मूवीज देखने जैसे टास्क होते हैं। आखिर में चैलेंज के तौर पर खिलाड़ी को आत्महत्या करने के लिए कहा जाता है।

फैक्ट फाइल

30 जुलाई 2017 को, मुंबई के अंधेरी (पूर्व) में 14 साल के एक लड़के ने सातवीं मंजिल से कूद कर आत्महत्या की। यह भारत में ब्लू वेल डेथ का पहला मामला था। इसके बाद कोलकाता, कोच्चि और दिल्ली में भी कई बच्चों ने ब्लू वेल खेलते हुए अपनी जान गंवाई।

130 बच्चों ने सिर्फ रूस में ही आत्महत्या की। इसके अलावा गेम खेलते हुए दुनिया भर में सैकड़ों बच्चों ने अपनी जान गंवाई।

100 के करीब बच्चों ने कथित रूप से इस गेम को खेलने के बाद जान दी या जान देने की कोशिश की।

वक्त रहते बच्चे को बचाया

कहते हैं कि सिर्फ ब्लू वेल ही नहीं बल्कि सामान्य परिस्थितियों में भी पैरंट्स अपने बच्चों को लेकर चिंतित रहते हैं क्योंकि कम उम्र के कारण बच्चों को सही गलत के बीच का फर्क नहीं पता होता है। फिर चाहे वह नशा हो या फिर इस तरह के गेम्स। हमारे पास बहुत से ऐसे पैरंट्स आते हैं जो अपने बच्चों के इस तरह के गेम्स में इन्वॉल्व होने का पता लगाने के लिए कहते हैं। ऐसा ही एक केस हमारे पास कुछ दिन पहले आया था। पैरंट्स ने बताया कि उनका बच्चा आजकल कुछ ज्यादा ही चिड़चिड़ा हो रहा है। मोबाइल के इस्तेमाल पर रोक लगाने पर वह झगड़ने लगता है। जबकि उसका ऐसा व्यवहार नहीं है। बच्चे के स्कूल और फ्रेंड सर्कल के बारे में पता किया तो ज्यादातर बच्चे उसकी तरह टेक्नोसेवी थे। जब उसके फोन की हिस्ट्री खंगाली गई तो पता चला कि उनके फोन से कई बार ब्लू वेल नाम से सर्च किया है। साथ ही लोगों के कुछ कमेंट्स भी पढ़े और लाइक किए हैं। हालांकि, सिक्योरिटी सेटिंग्स के चलते वह ऐप को डाउनलोड नहीं कर सका। आखिर में हमने उसे पैरंट्स की मदद से समझाया कि यह गेम उसके लिए जानलेवा साबित हो सकता है। काफी काउंसलिंग करने के बाद उसके दिमाग से ब्लू वेल का भूत उतारा गया।

आसान नहीं होता पता लगाना

बच्चे के दिमाग में क्या चल रहा है, यह जान पाना जरा मुश्किल होता है। हालांकि, घर से निकलने के बाद वह किस तरह के लोगों से मिलता है, उसके कौन दोस्त हैं, यह जानना जरूरी है।

बच्चों के अफेयर्स से लेकर नशे की लत जैसी किसी आदत का पता लगाना तो आसान होता है, लेकिन मोबाइल में वे क्या खेल रहे हैं, इसे जानना जरा मुश्किल होता है। उस वक्त यह काम और भी मुश्किल हो जाता है, जब बच्चा पर्सनल मोबाइल यूज करता है। हाल ही में हमारे पास एक ऐसा केस आया, जिसमें देर से उठने वाला लड़का रोज तड़के चार बजे उठने लगा। वह घूमने की बात कहकर घर से निकल जाता या फिर कंप्यूटर ऑन कर लेता। दरवाजा बंद होने की वजह से पैरंट्स को शक हुआ कि वह ब्लू वेल गेम के टास्क को करने के लिए सुबह उठता है। ऐसे में उन्होंने हमारी मदद ली। हमने अपने डिजाइन किए गए स्पाई ऐप की मदद से यह पता लगाने की कोशिश की लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हासिल हुआ। बाद में पता चला कि वह स्टडीज को लेकर परेशान था। ऐसे में नींद न आने की वजह से सुबह घूमने निकल जाता था।

OF INDIA

आलिया से अनबन पर खुलकर बोलीं जैकलीन

काफी दिनों से ऐसी चर्चा चल रही थी कि आलिया भट्ट और जैकलीन फर्नांडिस के बीच कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है। इसका कारण सिद्धार्थ मल्होत्रा से जैकलीन की बढ़ती नजदीकियों को बताया गया। मगर अब इन चर्चाओं पर विराम लगाते हुए खुद जैकलीन ने इस मामले पर खुलकर जवाब दिया है। जैकलीन ने कहा, 'मीडिया इन चीजों को ऐसे दिखाता है, जैसे हम एक्ट्रेसेज आपस में लड़ रही हैं। लोगों को लगता है कि मुझे तापसी पन्नू से तब से दिक्कत है, जब से मैंने उनके साथ काम भी नहीं किया था।' सिद्धार्थ मल्होत्रा से अपने लिंकअप की खबरों के बारे में जैकलीन ने कहा, 'मैंने आलिया को अनफॉलो नहीं किया, बल्कि मैंने उन्हें कभी फॉलो ही नहीं किया था।

जब शुरू में यह लिंकअप की बात शुरू हुई, तो मुझे लगा कि कुछ दिन में ये बातें अपने आप बंद हो जाएंगी, लेकिन धीरे-धीरे मैं इससे परेशान होने लगी। फिर मेरे और आलिया के बीच अनबन की खबरें आने लगीं। मुझे पता है कि आलिया बहुत समझदार है और वह ये सब समझेगी कि क्या चल रहा है।' जैकलीन ने यह भी बताया कि उन्होंने अपना पक्ष साफ करने के लिए आलिया को फोन कर उनसे बातचीत भी की। बकौल जैकलीन, 'मैंने आलिया को बताया कि मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं या क्या सोचते हैं, लेकिन मुझे इससे फर्क पड़ता है कि वह (आलिया) मेरे बारे में क्या सोचती है। हम लोग एक-दूसरे को ट्विटर पर फॉलो करते रहते हैं, लेकिन मुझे कभी पता ही नहीं चला कि मैंने उन्हें इंस्टाग्राम पर फॉलो नहीं किया है।' जैकलीन ने बताया कि इस बात पर आलिया हंसने लगीं। आलिया ने यह भी कहा कि अगली बार जब हम लोग मिलेंगे, तो ढेर सारी सेल्फीज लेंगे और उन्हें सोशल मीडिया पर अपलोड करेंगे। सिद्धार्थ के साथ रिलेशनशिप की खबरों पर जैकलीन ने कहा, 'पहली बात तो यह है कि मैं किसी और को डेट कर रही हूं, जिसके बारे में बाद में बात की जाएगी। जहां तक सिद्धार्थ का सवाल है, तो वह सिर्फ मेरा दोस्त है। हम एक-दूसरे को डेट नहीं कर रहे हैं।' गौरतलब है कि सिद्धार्थ और जैकलीन ने पिछली फिल्म 'ए जेंटलमैन' में साथ काम किया था।